R-4-□ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ □ (□ □ □ □ □ □ □ □ □ □).docx

Central University of Gujarat, Gandhinagar

Document Details

Submission ID

trn:oid:::29162:83717308

Submission Date

Feb 27, 2025, 5:22 PM GMT+5:30

Download Date

Feb 27, 2025, 5:23 PM GMT+5:30

File Name

R-4-शालनिी मशि्रा (शोधार्थनिी).docx

File Size

172.6 KB

11 Pages

2,772 Words

13,293 Characters

8% Overall Similarity

The combined total of all matches, including overlapping sources, for each database.

Filtered from the Report

- Bibliography
- Quoted Text
- Cited Text
- Small Matches (less than 8 words)

Top Sources

0% Internet sources

0% Publications

8% Submitted works (Student Papers)

Integrity Flags

0 Integrity Flags for Review

No suspicious text manipulations found.

Our system's algorithms look deeply at a document for any inconsistencies that would set it apart from a normal submission. If we notice something strange, we flag it for you to review.

A Flag is not necessarily an indicator of a problem. However, we'd recommend you focus your attention there for further review.

Top Sources

0% Internet sources
0% Publications
8% Submitted works (Student Papers)

Top Sources

The sources with the highest number of matches within the submission. Overlapping sources will not be displayed.

#	Type	Source	Match
1	Submitted works	Liverpool John Moores University on 2024-08-25	<1%
2	Submitted works	Choithram International School on 2016-02-16	<1%
3	Submitted works	Jawaharlal Nehru University (JNU) on 2022-08-04	<1%
4	Submitted works	Pacific University on 2016-10-20	<1%
5	Submitted works	Khwaja Moinuddin Chishti Language University on 2024-01-09	<1%
6	Submitted works	North-Eastern Hill University, Shillong on 2023-11-29	<1%
7	Submitted works	Indian Institute of Information Technology, Allahabad on 2024-07-22	<1%
8	Submitted works	North-Eastern Hill University, Shillong on 2024-07-12	<1%
9	Submitted works	Pacific University on 2018-06-07	<1%
10	Submitted works	Odisha State Open University on 2025-01-21	<1%
11	Submitted works	Pacific University on 2018-05-01	<1%

12 Submitted works

Rhodes College on 2021-07-02 <1%

13 Submitted works

Somaiya Vidyavihar on 2024-10-24 <1%

14 Submitted works

Banaras Hindu University on 2023-01-21 <1%

15 Submitted works

Central University of Gujarat on 2019-10-31 <1%

16 Submitted works

HFS International on 2017-02-27 <1%

17 Submitted works

Institute of Infrastructure Technology Research and Management - IITRAM on 20... <1%

18 Submitted works

King's College on 2024-04-21 <1%

19 Submitted works

Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration of Management on 2022... <1%

20 Submitted works

Lal Bahadur Shastri National Academy of Administration of Management on 2023... <1%

21 Submitted works

Rhodes College on 2021-07-02 <1%

22 Submitted works

Saint Leo University on 2023-10-26 <1%

23 Submitted works

Savitribai Phule Pune University on 2024-07-18 <1%

24 Submitted works

Sharad Pawar International School on 2016-11-30 <1%

25 Submitted works

Swami Rama Himalayan University on 2024-01-01 <1%

26	Submitted works	
Symbiosis International School on 2017-02-09		<1%

1

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में अर्थव्यवस्था एवं औद्योगिक शिक्षा का स्वरुप

शालिनी मिश्रा (शोधार्थिनी)
शिक्षाशास्त्र विभाग
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी

सारांश

औद्योगिक शिक्षा का मानव सभ्यता पर गहरा प्रभाव रहा है और भविष्य में भी रहेगा। इक्कीसवीं सदी में तो औद्योगिक शिक्षा ने एक नया समाज गढ़ने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। पूंजी या शारीरिक श्रम की अपेक्षा ज्ञान प्रमुख उत्पादन स्त्रोत बन गया है। बीते दशक में सूचना युग के जन्म के बाद हर तरफ औद्योगिक शिक्षा के नवीन नाम सामने आये हैंनालेज , नालेज बेसड क्वालिटी ऑफ लाईफ का ,नॉलेज मैनेजमेंट ,नॉलेज वर्कस् ,नॉलेज जॉब ,इकानॉमी जहाँ अधिकांश जनसंख्या ,आधारित थी-कृषि -शोर मचा हुआ है। प्राचीन भारतीय अर्थव्यवस्था कृषि कार्य में संलग्न थी। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर वैदिक काल तककृषि मुख्य व्यवसाय , और कारीगरों की भूमिका ,व्यापारी ,बना रहा। समाज में विभिन्न वर्गों के लोग जैसे किसान ,शिल्प और हस्तकला उद्योगों में भी उन्नति हुई। विशेषकर कपड़ा ,महत्वपूर्ण थी। इस दौरान धातु और आभूषण उद्योगों में।

व्यापार की दृष्टि से भारत का समुद्री मार्गों और स्थलीय मार्गों के माध्यम से अन्य सभ्यताओं से व्यापारिक संबंध स्थापित था। भारत का व्यापार विशेषकर मसालेकपास और कीमती ,रेशम , पत्थरों के लिए प्रसिद्ध था। 4 प्राचीन काल में व्यापार का विकास कई महत्वपूर्ण बंदरगाहों जैसे सोपारा कालीकट और ताम्रलिप्ति के माध्यम से हुआ। ,

अतः प्राचीनकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था कृषिउद्योग और व्यापार के सहारे न केवल जीवित , रही बल्कि उसने अपनी पहचान भी स्थापित की। प्राचीनकाल में हुए आर्थिक और औद्योगिक विकास ने भारत को विश्वव्यापी पहचान दिलाई।

सांकेतिक शब्द - भारतीय ज्ञान परंपरा शिक्षा,उद्योग, अर्थव्यवस्था,

प्रस्तावना

आत्मनिर्भरता की भावना से ही मनुष्य का अभ्युदय होता है और उसके जीवन का चहुँमुखी -
2 विकास समुचित रूप से होता है। प्राचीन काल में यह माना गया कि शिक्षा मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाती है। अपने कर्मों और उत्तरदायित्वों को आत्मविश्वास पर ही सही ढंग से - विश्वास जागृत कराया जाता था -निष्पन्न किया जा सकता था। इसीलिए ब्रह्मचारी में यह आत्म मति रह सके। इसी विश्वास के साथ -कि वह भावी जीवन की भयंकर कठिनाइयों में भी स्थिर वह गुरु के सान्निध्य में रहकर विभिन्न कार्यक्षम विषयों की जानकारी प्राप्त करता और अपने अद्भुत साहस का परिचय देता था। भविष्य के संकटमय जीवन को अपने अनुकूल बनाने में उसकी आत्मनिर्भरता ही उसकी एकमात्र सहायक होती थी। ब्रह्मचारी के लिए आत्मनिर्भरता के लिए आत्मसंयम की अपेक्षा की जाती थी।

19 साहित्यिक शिक्षा का क्षेत्र तथा उपयोगिता सीमित होने के कारण उसके साथसाथ या उसकी - अपेक्षा औद्योगिक शिक्षा की आवश्यकता समझी गयी। इस प्रकार की शिक्षा के प्राप्त होने से विद्यार्थियों को जीविकोपार्जन के अन्य साधन प्राप्त होते हैं। इसमें किसी व्यवसाय की विधिवत् श‍िक्षा प्रदान की जाती है। औद्योगिक शिक्षा के लिये उच्च कोटि की सम्यक् तथा अनुशासित अध्ययनशीलताप्रशिक्षण तथा दक्षता आवश्यक है। प्रारम्भ में केवल तीन प्रकार के पांडित्यपूर्ण , विधिशास्त्र एवं चिकित्साशास्त्र को ही मान्यता प्राप्त थी। क ,धर्मशास्त्र ,व्यवसायोंालान्तर में

वास्तु कलाकृषि व्यापार आदि अन्य व्यवसायों ,वनविद्या ,अध्यापन ,शिल्पकला ,अभियांत्रिकी , को भी मान्यता प्रदान की गयी।

प्राचीन भारत के स्मारकों एवं शिलालेखों में भारतीयों के असाधारण कौशलयुक्त उच्च कोटि के अभियांत्रिक ज्ञान के प्रमाण प्राप्त होते हैं। प्रसिद्धि प्राप्त अध्यापक अपने निवास स्थानों पर छात्रों को वास्तुचित्रकला एवं संगीत आदि की शिक्षा प्रदान किया करते थे। ,शिल्प ,स्थापत्य , विशेष कलाओं तथा शिल्पों का प्रशिक्षण कार्यशालाओं में दिया जाता था। शिक्षार्थी बालक बहुधा शिल्पियों से सम्बद्ध कर दिये जाते थे। व्यापारिक वर्ग अपने बच्चों के शिक्षण के लिए सामन्ती आधार पर संगठित निजी विद्यालयों की व्यवस्था करते थे। इन विद्यालयों को परम्परागत व्यवसायों का अनुसरण करना पड़ा।

26 उद्योग धन्धों से न केवल स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति होती थी बल्कि सामान निर्यात होने के कारण देश की समृद्धि में वृद्धि हुई। इसके साथसाथ भारतीय शिल्पियों के उच्च कोटि के - व्यावसायिक शिक्षा की नियमित व्यवस्था के अस्तित्व को प्रमाणित करता है। ,कलात्मक कौशल आज शिक्षा प्राप्त करना हर बालक का अधिकार हैइससे हम सभी सहमत हैं। शैक्षिक प्रकिया , ऐसी होनी चाहिए जिससे बालकों में आधारभूत क्षमतायोग्यता और कौशलों का विकास किया , ताकि वह भावी जीवन के लिए तैयार हो सके और राष्ट्र के विकास में भागीदार हो ,जा सके सके। यह तभी सम्भव है जब छात्र सीखे गए ज्ञान का व्यवहारिक प्रयोग भी कर सकें। इस हेतु आज शिक्षाको सैद्धान्तिक पाठ्यक्रमों के भंवरजाल से निकलकर मजबूत व्यावसायिक आधार देने कालान्तर में वास्तु कलाकृषि व्यापार आदि ,वनविद्या ,अध्यापन ,शिल्पकला ,अभियांत्रिकी , अन्य व्यवसायों को भी मान्यता प्रदान की गयी।

प्राचीन भारत के स्मारकों एवं शिलालेखों में भारतीयों के असाधारण कौशलयुक्त उच्च कोटि के अभियांत्रिक ज्ञान के प्रमाण प्राप्त होते हैं। प्रसिद्धि प्राप्त अध्यापक अपने निवास स्थानों पर छात्रों को वास्तुचित्रकला एवं संगीत आदि की शिक्षा प्रदान किया करते थे। ,शिल्प ,स्थापत्य , विशेष कलाओं तथा शिल्पों का प्रशिक्षण क ार्यशालाओं में दिया जाता था। शिक्षार्थी बालक बहुधा शिल्पियों से सम्बद्ध कर दिये जाते थे। व्यापारिक वर्ग अपने बच्चों के शिक्षण के लिए सामन्ती आधार पर संगठित निजी विद्यालयों की व्यवस्था करते थे। इन विद्यालयों को परम्परागत व्यवसायों का अनुसरण करना पड़ा।

ज्ञान अथवा विद्या से ही व्यक्ति शिल्प में निपुणता प्राप्त करता है।व्यक्ति एवं समाज का " बौद्धिक उत्कर्ष विद्या से ही संभव है। प्राचीन भारत में भौतिक की अपेक्षा बौद्धिक ज्ञान का आध्यात्मिक चिन्तन तथा भौतिक ,त्यागमय जीवन ,महत्व था। उच्च विचार एवं ज्ञान आकर्षण सेविरक्ति मानव जीवन के मूल्य माने गये थे। शिक्षा केवल मस्तिष्क का प्रशिक्षण नहीं अपितु आत्मा का प्रशिक्षण है इसका उद्देश्य ज्ञान तथा विवेक दोनों प्रदान करना है। इसका उद्देश्य स्वतंत्र तथा विचारशील व्यक्ति का निर्माण करनाज्ञानार्जन की अभिरूचि उत्पन्न , ,करनास्वावलंबी एवं आत्म निर्भर मानव बनानासमाजसेवी ,ज्ञान एवं धर्म का समन्वय करना , विश्व मानव की धारणा विकसित करना है। शिक्षा और ,तथा कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति उत्पन्न करना अपने पारिवारिक दायित्वों को ,ज्ञान के कारण मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता था निष्पन्न करता था तथा अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सन्नद्ध हो जाता था। कार्य विभाजन के अनुसार सभी वर्णों और जातियों के भिन्नजिनका पालन करना सभी लोगों ,भिन्न कर्म थे- जिन्हें वे ,वैश्य और शूद्र के अपने विभिन्न कर्म थे ,क्षत्रिय ,का अपना कर्तव्य था। ब्राह्मण मनोनिवेशपूर्वक सम्पादित करते थेयद्यपि ऐसे भी उदाहरण मिलते हैं जब इन वर्णों के ;

कतिपय सदस्यों ने आपत्ति काल में अपने वर्णगत कर्म का त्याग करके दूसरे वर्णों के कर्म वैश्यों ने शू ,अपना लिए क्षत्रियों ने ब्राह्मणों के कर्म अपनाये और ब्राह्मणों ने क्षत्रियों केद्रों के और शूद्रों ने वैश्यों के। वंशानुगत पेशे का प्रचलन और कार्य क्षमता का निष्पादन सामाजिक उत्तरदायित्वों के अन्तर्गत आएजिन्हें कालान्तर में सफलतापूर्वक पूरा किया गया। ,

वर्तमान में भी औद्योगिक शिक्षा का सीधा संबंध देश के आर्थिकसामाजिक विकास से माना - जाता है। देश के युवाओं को औद्योगिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से कौशल सम्पन्न बनाकर उन्हें तेजी से उभरती मानवशक्ति की आवश्यकता की पूर्ति का लाभ उठाने के लिए तैयार करना देश की प्राथमिकता है। हमारे देश के सामने अनेकों चुनौतियाँ हैंउनमें से सबसे प्रमुख चुनौती , है आदर्श जीवनस्तर को बनाये रखने के लिए करोड़ों लोगों को लाभदायक रोजगार उपलब्ध तथा ;शिक्षा तथा रोजगार की कड़ी को समेकित करने ,कराना। शिक्षा को जीवन से जोड़ने युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के महत्वपूर्ण लक्ष्य की प्राप्ति हेतु देश भर में औद्योगिक व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधानपरामर्श संबंधी अनेकों ,विस्तार ,प्रशिक्षण ,विकास , गतिविधियाँ वृहत स्तर पर कार्यान्वित की जा रही हैं।

प्राचीनकाल में औद्योगिक शिक्षा का स्वरूप किसी -व्यक्ति को प्रशिक्षित करने हेतु दी जाने वाली विद्या औद्योगिक शिक्षा है। औद्योगिक शिक्षा का अर्थ है किसी शिल्पव्यवसाय या ,ट्रेड , कौशलों व अभिवृत्तियों की शिक्षा देना। ,अवबोध ,प्रोफेशन को अपनाने के लिए आवश्यक ज्ञान औद्योगिक शिक्षा की विशेषता है कि यह व्यक्त ि को अनेक सुसम्बन्धित व्यवसायों के लिए तैयार करती है। इसके पाठ्यचर्या की अवधि निर्धारित होती है। इसमें हस्तकौशलों की तुलना में - वैज्ञानिक नियमों के अवरोध तथा उपयोग की शिक्षा अधिक दी जाती है। वर्तमान में औद्योगिक

शिक्षा के अन्तर्गत व्यावसायिक तथा प्राविधिकशिक्षा ग्रहण की जाती है अर्थात् जीविकोपार्जन हेतु किसी व्यवसाय की सामान्य शिक्षा देना व्यावसायिक शिक्षा है।

प्राचीन काल में औद्योगिक शिक्षा का स्वरूप अत्यंत व्यावहारिक और अनुभवआधारित था। यह - जहाँ शिष् ,शिष्य परंपरा के माध्यम से संचालित होती थी-मुख्यतः गुरुय अपने गुरु से विभिन्न प्रकार की तकनीकी और हस्तकला संबंधी ज्ञान प्राप्त करते थे। इस शिक्षा का उद्देश्य न केवल रोजगार के साधनों को विकसित करना थाबल्कि समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए , विभिन्न उद्योगों का विकास करना भी था।

1. **गुरु-शिष्य परंपरा-** शिक्षा मुख्यतः गुरुकुलों और आश्रमों में दी जाती थीजहाँ शिष्य अपने , गुरु के साथ रहते थे और उनसे विभिन्न कौशल सीखते थे।

2. **हस्तकला और शिल्पकला-** विभिन्न प्रकार की हस्तकला ,मूर्तिकला ,कढ़ाई ,जैसे कि बुनाई , का प्रशिक्षण दिया जाता था। प्राचीन भारतीय समाज में ,और गहनों की निर्माण कला ,धातुकर्म मिट्टी के ,धातुकर्म ,कढ़ाई ,बुनाई ,हस्तकला और शिल्पकला का विशेष महत्व था। वस्त्र निर्माण और ,मूर्तिकला ,बर्तन आभूषण निर्माण जैसे उद्योग प्रमुख थे। भारतीय कारीगरों की कारीगरी विश्व प्रसिद्ध थी और इनकी वस्तुओं की मांग दूरदूर तक थी।-

3. **प्रशिक्षण की अवधि-** शिक्षा की अवधि निश्चित नहीं थी। शिष्य तब तक प्रशिक्षण प्राप्त करते रहते थे जब तक वे पूरी तरह से कौशल में निपुण नहीं हो जाते थे।

4. **व्यावहारिक ज्ञान-** शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यावहारिक ज्ञान और कौशल को बढ़ावा देना था। सिद्धांत के मुकाबलेशारीरिक कार्य और अभ्यास पर अधिक जोर दिया जाता था। ,

5. **व्यापार और वाणिज्य-** प्राचीन भारत एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था। जलमार्ग और स्थलमार्ग के माध्यम से भारत का व्यापार मेसोपोटामियापूर्व -और दक्षिण ,चीन ,रोम ,मिस्र ,

8 ,और रत्न शामिल थे। बंदरगाह शहर ,धातुएँ ,कपड़े ,एशिया के साथ होता था। व्यापार में मसाले महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र थे। ,और मूसिरिस ,ताम्रलिप्ति ,जैसे लोटल

21 6. **जाति और वंश पर आधारित शिक्षा-** प्राचीन काल में शिक्षा का स्वरूप जाति और वंश पर भी निर्भर करता था। जैसे ,क्षत्रिय युद्धकला ,ब्राह्मण वेद और पुरोहिताई की शिक्षा ग्रहण करते थे , वैश्य व्यापार और शूद्र सेवा और हस्तकला में निपुण होते थे।

7. **कृषि-** प्राचीन भारत में कृषि प्रमुख आर्थिक गतिविधि थी। सिंचाई के उन्नत तरीकोंजैसे कि , ,कुओं और तालाबों के माध्यम से खेती को बढ़ावा दिया जाता था। प्रमुख फसलों में गेहूं ,नहरों और कपास शामिल थे। कृषि उत्पादों का उत्पादन सिर्फ स्थानीय उपयोग के ,दालें ,जौ ,चावल बल्कि व्यापार क ,लिए ही नहींे लिए भी किया जाता था।

8. **धातुकर्म-** प्राचीन भारत में धातुकर्म एक प्रमुख उद्योग था। तांबाऔर सोना ,लोहा ,कांसा , और आभूषण बनाने में किया जाता था। धातुकर्म के ,हथियार ,जैसे धातुओं का उपयोग औजार 17 उन्नत तकनीकों के कारण भारतीय हथियार और उपकरण काफी प्रसिद्ध थे।

.9 **वस्त्र उद्योग-** भारत में वस्त्र उद्योग बहुत विकसित था। कपासऔर ऊन के वस्त्र न ,रेशम , खासकर ,केवल देश के भीतर बल्कि विदेशों में भी निर्यात किए जाते थे। भारतीय वस्त्र अत्यधिक मांग में थे। ,और सूती कपड़े ,रेशम ,मलमल

10. **व्यापार और वाणिज्य-** प्राचीन भारत एक महत्वपूर्ण व्यापारिक केंद्र था। जलमार्ग और
7 स्थलमार्ग के माध्यम से भारत का व्यापार मेसोपोटामियापूर्व -और दक्षिण ,चीन ,रोम ,मिस्र ,
8 ,और रत्न शामिल थे। बंदरगाह शहर ,धातुएँ ,कपड़े ,एशिया के साथ होता था। व्यापार में मसाले महत्वपू ,और मूसिरिस ,ताम्रलिप्ति ,जैसे लोटलर्ण व्यापारिक केंद्र थे।

11. **शहरीकरण और नगर व्यवस्था-** प्राचीन भारत में नगरों का विकास हुआजो औद्योगिक , और वाराणसी जैसे नगर ,पाटलिपुत्र ,मोहनजोदड़ो ,और व्यापारिक गतिविधियों के केंद्र थे। हड़प्पा अपने उन्नत शहरीकरण और व्यवस्थित अर्थव्यवस्था के लिए प्रसिद्ध थ े।

6 12. **मुद्रा और बैंकिंग प्रणाली-** प्राचीन भारत में मुद्रा का उपयोग व्यापार में होता था। सिक्कों का
2 चलन प्रचलित था और यह ताम्रऔर सुवर्ण से बनाए जाते थे। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में ,रजत , जिससे संकेत मिलता है क ,देन के प्रमाण मिलते हैं-बैंकिंग और वित्तीय लेनि ऋणऔर ,जमा , अन्य वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध थीं।

वर्तमान औद्योगिक शिक्षा प्रणाली यद्यपि वैदिक शिक्षा प्रणाली से पूर्णतः भिन्न दृष्टिगोचर होती हैफिर भी वर्तमान शिक्षा को नियोजित करने व इसकी अनेकानेक समस्याओं का , समाधान खोजने की प्रत्येक चेष्टा में प्राचीनतम शि क्षा के मूलभूत आधारों पर ध्यान देना सार्थक सिद्ध हो सकता है। वैदिक शिक्षा के आदर्शों अर्थात् श्रद्धा-आत्म ,आदर ,सेवा ,भक्ति , नैतिक बल आदि का अनुसरण करके वर्तमान ,ब्रह्मचर्य ,सादा जीवन उच्च विचार ,अनुशासन समाज की आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था की जा सकत ी है। पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति के अन्धानुकरण में हम अपने पुरातन आदर्शों को विस्तृत करते जा रहे हैशिक्षा हमारे , वर्ग ,निर्धनता ,बेरोजगारी ,अनुशासन हीनता ,जीवन से दूर हटती जा रही है। छात्र असंतोष भाषायी समस्याये ,राष्ट्रीय विघटन ,सामाजिक बुराइयां ,संघर्ष ं जैसी अनुत्तरित समस्यायें दिन-प्रतिदिन विकराल रूप धारण करती जा रही है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली के आदर्श तत्वों को वर्तमान शिक्षा में समावेश करके इन समस्याओं का समाधान सम्भव है। जीवन के वास्तविक गुणों व आदर्शों का अनुसरण करके छात्रगण भारतवर्ष की सम ,मूल्यों ृद्धि तथा वैभव का पुनरोद्धार कर सकेंगे। जब हमारी शिक्षा में प्राचीन सनातन आदर्शों को सम्मिलित किया जायेगा

16 तब ही हमारी शिक्षा प्रणाली अतीत की भांति विदेशी छात्रों को अपनी तरफ आकर्षित कर सकेगी
तथा भारतीय शिक्षा के गौरव को पुनःस्थापित कर सकेगी।
1 प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक कालीन शिक्षा प्रणाली दो स्तरों में विभाजित थी परा एवं
20 अपरा विद्या। परा विद्या में आध्यात्मिक ज्ञान एवं अपरा विद्या में औद्योगिक शिक्षा प्रदान
की जाती थी। वर्तमान में इसकी उपादेयता तीन स्वरूपों में मिलती है साहित्यिकवाणिज्यिक ,
एवंविज्ञानपरक। प्राचीनकाल में वैदिक कालीन शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती थीआधुनिक ,
24 काल में इसकी उपादेयता बनी हुई है। प्राचीन काल में वैदिक एवं बौद्ध कालीन शिक्षा के
विह ,मठोंारों में दी जाती थीभोजन एवं वस्त्रादि की व्यवस्था निःशुल्क थी। ,जहाँ आवास ,
प्राचीन काल में वैदिक एवं बौद्ध कालीन शिक्षण संस्थाएँ प्रकृति के सुरम्य गोद में स्थित होते
4 चरित्रिक एवं आध्यात्मिक विकास पर बल ,थे। प्राचीन काल में वैदिक कालीन शिक्षा में नैतिक
4 दियाा जाता थानालंदा एवं ,प्राचीन काल में वैदिक कालीन शिक्षा के केन्द्र तक्षशिला ,
बड़े संस्थान -विक्रमशिला जैसे उच्च संस्थान थे। औद्योगिक शिक्षा के लिए वर्तमान में भी बड़े
1 स्थापित किये गये हैं।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक कालीन औद्योगिक शिक्षा के व्यवहारिक एवं सैद्धांतिक
2 ज्ञान पर विशेष ध्यान दिया जाता था जिसकी उपादेयता वर्तमान में भी है। प्राचीन काल में
वैदिक में विशेष तौर पर कलाकौशल एवं व्यवसायों की शिक्षा पर विशेष बल दिया जाता था। ,
25 वर्तमान में यह शिक्षा विज्ञान तथा तकनीकी के माध्यम से दी जा रही है जो आज के युग के
सर्वोत्तम औद्योगिक शिक्षा है। वर्तमान समय में औद्योगिक शिक्षा पर विशेष बल दिया जा रहा
है।

शोधनिष्कर्ष-

12 राष्ट्र के प्रगति में व्यावसायिक शिक्षा का बहुत योगदान होता है। आधुनिक युग में कोई भी राष्ट्र व्यावसायिक शिक्षा के बिना विकसित राष्ट्र नहीं बन सकता। पूर्व राष्ट्रपति डा० ए० पी० जे० अब्दुल कलाम के विचार प्रासंगिक हैंकिसी भी राष्ट्र की खुशहाली और प्रगति तकनीकी " - और रोजगारपरक शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। भारत एक विकासशील देश है। गरीबी

3 और बेरोजगारी इसकी प्रगति में सबसे बड़ी बाधा है।भारत में पर्याप्त मानवीय शक्ति है , तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के द्वारा इस शक्ति का अधिकतम उपयोग किया जा सकता 'है।

व्यावसायिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों को आधुनिक स्वरूप दिया जाए। पाठ्यकम राष्ट्र के रोजगार क्षेत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए। पाठ्यक्रम में प्रायोगिक कार्यों पर विशेष ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है ताकि व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर लेने के बाद कुशल व्यक्ति अपना स्वतंत्र व्यवसाय प्रारम्भ करके बेरोजगारी से मुक्ति प्राप्त कर सकें।

भारतीय ज्ञान परंपरा में औद्योगिक शिक्षा केवल आर्थिक प्रगति तक सीमित नहीं थीबल्कि यह , सांस्कृतिक और पर्यावरणीय संतुलन को भी प्रोत्साहित करती थी। आधुनिक समय ,सामाजिक इस परंपरा से प्रेरणा लेकर व्यावसायिक और औद्योगिक शिक्षा को कौशल आधारित और ,में पर्यावरण अनुकूल बनाया जा सकता है।

3 वैदिक काल में तकनीकी और रोजगार परक शिक्षा पर बल दिया जाता था आधुनिक काल में भी

6 इसी को अमल में लाया जा रहा है। भारत में पर्याप्त मानवीय शक्ति हैतकनीकी और , व्यावसायिक शिक्षा के द्वारा इस शक्ति का अधिकतम उपयोग किया जा सकता है। यह धारणा

13 प्राचीन काल से भारत में पायी गयी। अतः भारतीय शिक्षा की सांस्क‍ृतिक विरासत का ज्ञान

देश के प्रत्येक नागरिक के लिये अपरिहार्य है। कोई भी शिक्षा व्यवस्था तब ही सफल होने का दावा कर सकती है जब उसका आधार देश की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि हो और वह उस देश की जनता की आकांक्षाओं को पूर्ण करने योग्य हो। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के औद्योगिक शिक्षा की संस्कृति को वर्तमान में बनाये रखने की आवश्यकता है।

संदर्भित ग्रन्थ -

1. अल्तेकर) .एस.ए ,1957(, प्राचीन भारत में शिक्षावाराणसी। ,नन्द किशोर एण्ड ब्रदर्स ,
2. अग्रवाल) .एस.ए ,1990(, शिक्षा के तात्विक सिद्धान्तमेरठ। ,राजेश पब्लिशिंग हाउस ,
3. चटर्जी) सीताराम ,1970(, शिक्षा दर्शनलखनऊ। ,सूचना विभाग ,हिन्दी समिति ,
4. पाण्डेय) रामशकल ,2008(, शिक्षा दर्शनआगरा। ,विनोद पुस्तक मंदिर ,
5. डॉ,शिवस्वरूप .(2000) ,सहायकृत प्राचीन भारत का सामाजिक एवं आर्थिक इतिहास ; नई दिल्ली। ,मोतीलाल बनारसीदास
6. प्रेमनाथ)1969(, शिक्षा के सिद्धान्तइलाहाबाद। ,लोक भारतीय प्रकाशन ,
7. मिश्र) जयशंकर ,1980(, प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहासबिहार हिन ,्दी ग्रंथ अकादमीपटना ,कदमकुआं ,।
8. एममजूमदारकृत ए हिस्ट्री ऑफ एजूकेशन इन एन्शियेण्ट इण्डिया। .एन.
9. मुखर्जी) .के.आर ,1951(, प्राचीन भारतीय शिक्षा.मिलन एण्ड कं ,, बम्बई।
10. कृष्ण कुमारकृत)2000(; प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धतिनयी दिल्ली। ,